अध्याय-9 | रामवृक्ष बेनीपुरी

Worksheet-1

बहुविकल्पी प्रश्न

1. नवाब खीरे नहीं खा रहा था क्योंकि —

(अ) वह खीरे को तुच्छ समझता था

(ब) वह खीरे को तुच्छ समझता था तथा किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

(स) किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे

(द) खीरे को पेट के लिए ठीक नहीं समझते थे

2. लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक ठाली बैठे क्या अनुमान करने लगे?

(अ) वे अपनी कहानी के बारे में सोच रहे थे

(ब) वे नवाब साहब के कपड़ों के बारे में सोच रहे थे

(स) वे नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारणों के बारे में सोच रहे थे

(द) वे सोच रहे थे कि नवाबी चली गई, परन्तु आदतें नहीं गईं

3. लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक ने धन्यवाद के स्थान पर क्या शब्द-प्रयोग किया?

(अ) शुक्रिया
(ब) शराफ़त
(स) किबला
(द) आदाब-अर्ज

4. लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक को नवाब साहब नयी कहानी के लेखक कब लगे?

(अ) उन्हें खीरा सूंघकर उसका रसास्वादन करते देखकर।
(ब) उन्हें पहली बार रेलगाड़ी के डिब्बे में देखकर।
(स) उनके बिना खीरा खाए ही ऊँची डकार को सुनकर।
(द) उन्हें खीरा खाने की तैयारी करते हुए देखकर।

5. नवाब साहब द्वारा बार-बार खीरा खाने का आग्रह किया जा रहा था, इसे लेखक ने कैसे टाला?

(अ) पेट कमज़ोर होने का बहाना बनाकर
(ब) साफ साफ मना करके
(स) पेट भरे होने का बहाना बनाकर
(द) उपेक्षापूर्वक दूसरी ओर देखकर

6. यशपाल को किस रचना के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है?

(अ) तेरी मेरी उसकी बात
(ब) दिव्या
(स) दादा कामरेड
(द) झूठा सच

7. लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक नवाब के हाव-भाव को देखकर क्या सोच रहा था?

(अ) नवाब धनी होने का दिखावा कर रहा है

(ब) काश मैं भी नवाब होता तथा नवाब धनी होने का दिखावा कर रहा है दोनों

(स) नवाब अत्यंत गंदा है
(द) काश मैं भी नवाब होता

8. लखनवी अदाज़ पाठ के अनुसार लेखक ने किसे एब्स्ट्रैक्ट तरीका कहा है?

(अ) खीरा सूंघकर पेट भरने को
(ब) खीरा खाकर पेट भरने को
(स) खीरे को काटकर उस पर नमक-मिर्च बुरकने को
(द) खीरा धोकर तौलिया से पोंछने के तरीके को

पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

9. **नवाब साहब ने खीरे का आनंद किस प्रकार उठाया?**

(अ) खूब तैयारी से साफ किया, काटा, नमक-मिर्च बुरक दिया और खा लिया।

(ब) साबुत खीरा ही धोकर खा लिया।

(स) खीरों को धोया, छीलकर काटा, जीरा मिला नमक-मिर्च छिड़का, होठों तक ले गए, सूंघकर फेंक दिया।

(द) खीरों को धोया, छीला, कड़वाहट निकाली, चखा, कड़वा होने के कारण फेंक दिया।

10. **लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक क्या सोचकर डिब्बे में चढ़ा?**

(अ) डिब्बे में नवाब होंगे

(ब) डिब्बे में बैठने को मिलेगा

(स) डिब्बा साफ होगा

(द) डिब्बा खाली होगा

रिक्त स्थान :

11. यशपाल की मृत्यु ____________ हुई थी।

12. लखनवी अंदाज के लेखक ____________ है।

सत्य / असत्य

13. लेखक की दृष्टि में खीरा मध्यवर्ग का प्रतीक है।

14. नवाब साहब का सहसा जेब से चाकू निकालना लेखक को अच्छा नहीं लगा।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. नवाव ने खीरे का स्वाद कैसे लिया?

16. लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर लिखिए कि गाड़ी के किस डिब्बे में लेखक चढ़ गए और उनका कौन-सा अनुमान प्रतिकूल निकला? स्पष्ट कीजिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. लखनवी अंदाज़ को रोचक कहानी बनाने वाली कोई दो बातें लिखिए।

18. लखनवी अंदाज़ पाठ का लेखक, डिब्बे में नवाब साहब की उपस्थिति से असहज क्यों हो गया?

निबंधात्मक प्रश्न

19. 'लखनवी अंदाज़' व्यंग्य किस सामाजिक वर्ग पर कटाक्ष करता है? कहानी की दृष्टि से लखनवी अंदाज में आपको क्या विशेषता दिखाई देती है?

20. पतनशील सामंती समाज झूठी शान के लिए जीता है लखनवी अंदाज़ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

HOTS

21. लखनवी अंदाज कहानी के नगद साहब की विशेषताएँ लिखिए —

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by Ipca | Foundation missiongyan

JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

Worksheet-1
उत्तरमाला

1. (ब) नवाब खीरे को तुच्छ पदार्थ समझते थे तथा किसी के सामने खीरा खाना अपनी बेइज्जती मानते थे इसलिए वह खीरे नहीं खा रहे थे।
2. (स) लखनवी अंदाज पाठ में लेखक ठाली बैठे नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारणों के बारे में सोच रहे थे।
3. (अ) लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक ने धन्यवाद के स्थान पर शुक्रिया शब्द का प्रयोग किया।
4. (स) उनके बिना खीरा खाए ही ऊँची डकार को सुनकर।
5. (अ) पेट कमज़ोर होने का बहाना बनाकर।
6. (अ) यशपाल को उनके उपन्यास " तेरी मेरी उसकी बात" के लिए 1976 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
7. (अ) लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक नवाब के हाव-भाव को देखकर लेखक सोच रहा था कि नवाब धनी होने का दिखावा कर रहा है।
8. (अ) खीरा सूंघकर पेट भरने को
9. (स) खीरों को धोया, छीलकर काटा, जीरा मिला नमक-मिर्च छिड़का, होठों तक ले गए, सूंघकर फेंक दिया।
10. (द) लखनवी अंदाज़ पाठ में लेखक यह सोचकर डिब्बे में चढा कि डिब्बा खाली होगा।
11. **रिक्त स्थान :** वाराणसी में
12. **रिक्त स्थान :** यशपाल
13. **सत्य / असत्य :** असत्य
14. **सत्य / असत्य :** असत्य
15. खीरे को नाक के पास ले जाकर आँखें मूँद कर नवाव ने खीरे का स्वाद लिया।
16. लेखक गाड़ी के सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ गए। उन्होंने सोचा था कि डिब्बा निर्जन होगा, तो वे खिड़की से प्राकृतिक दृश्यों को देखते हुए अपनी नई कहानी के बारे में सोच सकते हैं पर उनका उनका उनके अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निर्जन नहीं था। उसमें एक नवाब साहब बैठे हुए थे।
17. 'लखनवी अंदाज़' कहानी को रोचक बनाने वाली कोई दो बातें निम्नलिखित हैं —
    नवाब साहब के खीरा काटने से लेकर उसे सूंघकर फेंक देने जैसे हास्यास्पद क्रियाकलाप करना।
    लेखक की जिज्ञासा बने रहना और दिलचस्प भाषा-शैली का प्रयोग।
18. लेखक डिब्बे में नवाब साहब की उपस्थिति से असहज हो गया क्योंकि अनुमान के विपरीत नवाब साहब डिब्बे में मौजूद थे, जो लेखक की पूर्व निर्धारित योजनाओं (जैसे एकांत चिंतन और कहानी के बारे में विचार) में बाधा डाल रहा था।
19. 'लखनवी अंदाज़' पाठ के माध्यम से लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है आज भी नवाबी लोग अपनी नवाबी छिन जाने पर झूठी शान तथा तौर-तरीकों का ही दिखावा करते हैं और ऐसा करते समय वे यह भी नहीं सोचते कि इसमें उन्हें कोई लाभ मिलने वाला नहीं। जैसे पाठ में अपने दिखावे की प्रवृत्ति के कारण नवाब साहब को भूखा ही रहना पड़ा । वास्तव में यह व्यंग्य उस सामंती वर्ग पर कटाक्ष करता है जो अपनी झूठी शान बनाए रखने के लिए कृत्रिमता से युक्त जीवन जीते हैं।
    कहानी की दृष्टि से 'लखनवी अंदाज़' में यह विशेषता है कि कोई भी कहानी बिना घटना, विचार और पात्रों के भी लिखी जा सकती है। हालाँकि ऐसी कहानी का न तो कोई उद्देश्य होता है और न ही कोई प्रभाव। आजकल लेखक ऐसी कहानी लिखते हैं जिनका कोई ओर-छोर नहीं होता। वस्तुतः इस कहानी के माध्यम से लेखक ने इन नई कहानीकारों पर ही व्यंग्य किया है।
20. इस पाठ के आधार पर यह पूर्णता स्पष्ट होता है कि पतनशील सामंती समाज झुट्ठी शान के लिए जीता है क्योंकि पाठ मे नवाब शान ने खीरा सूंघ कर खिड़की से बाहर फेंक दिया। अन्यथा वे ऐसे नहीं करते क्योंकि ऐसे करके उन्होंने अपने नवाबिपन और अपनी कम सोच का परिचय दिया है ऐसे करके उन्होंने अन्न का अपमान किया है।

मिशन ज्ञान पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें।
100% FREE! Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

वास्तविकता से बेखबर, बनावटी जीवन शैली जीने वाले नवाब साहब ने ट्रेन में लेखके की संगति के प्रति कोई उत्साह नहीं दिखाया। खानदानी रईस बनने का अभिनय करते हुए खीरा खाने में भी वे नजाकत दिखाते हैं और उसे सूंघने मात्र से पेट भरने की झूठी तुष्टि करते हैं।

21. **दिखावटी:** नवाब साहब अपनी नवाबी शान और दिखावे पर बहुत ध्यान देते हैं। वे खीरे को बिना खाए ही सूंघकर और फिर फेंककर अपनी रईसी का प्रदर्शन करते हैं।

नजाकत और नफासत: वे अपनी बातचीत और व्यवहार में नजाकत और नफासत का प्रदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, वे खीरे को खाने के बजाय, उसे सूंघकर और फिर फेंककर अपनी नजाकत दिखाते हैं।

वास्तविकता से दूर: नवाब साहब वास्तविकता से दूर भागते हैं और अपनी बनावटी जीवनशैली का प्रदर्शन करते हैं। वे खीरे के वास्तविक स्वाद और आनंद से दूर रहकर, केवल दिखावे के लिए उसका उपयोग करते हैं।

पतनशील सामंती वर्ग का प्रतीक: नवाब साहब पतनशील सामंती वर्ग का प्रतीक हैं, जो अपनी शानो-शौकत और दिखावे में ही खुश रहता है।

आत्म-सम्मान: वे आत्म-सम्मान को बहुत महत्व देते हैं और अपनी छवि को बनाए रखने के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

व्यंग्य: लेखक ने नवाब साहब के माध्यम से पतनशील सामंती वर्ग पर व्यंग्य किया है, जो वास्तविकता से दूर है। नवाब साहब का यह दिखावटी और बनावटी अंदाज, कहानी में एक हास्य पैदा करता है और लेखक को यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या ऐसे तरीके से पेट भरा जा सकता है।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App